

## श्रीजानकीजी की तन्मयता

“बिना कारण कृपालु साई ! नहर के तट पर जमें हुए सत्संग में इस प्रकार सम्बोधन करते हुए भक्त ने कहा- श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी का महाराज रामचन्द्र में कैसा अगाध अनुराग है ? वे झूम-झूमकर सूरदास के भाव में गा रहे हैं- ‘मोहिं तो सावन के अन्धहिं ज्यों सूझत हरो-हरो ।’ उनकी रग-रग में, दिल-दिमाग में प्रभु का साँवलापन भर गया है ।’

श्रीभक्तकोकिलजी ने अंजीर की वृक्षावली को अशोकवन देखते हुए भावमग्न होकर कहा-‘एक ऐसे सन्त शिरोमणि हैं जिनके रोम-रोम में, रेशे-रेशे में, दिल-दिमाग में, साँवरापन न समाकर बाहर छिटक जाता है और हरियाली कर देता है, जिसे बहिर्मुख लोग भी प्रत्यक्ष देखते हैं । बताओं वह सन्त शिरोमणि कौन हैं ?’

श्रीभक्तकोकिलजी के सत्संग में ऐसा होता है कि एक सत्संगी ने अपने मन में किसी भक्त का नाम लिया और दूसरे सत्संगी से पूछता है कि मेरे मन में किसका नाम है ? तुलसी, सूर, मीरा, कबीर आदि भक्तमाल के नाम लेते हुए किसी ने बूझ लिया तब तो ठीक है, नहीं तो पहेली बुझाने वाले को ही बताना पड़ता है । इसमें अनेक सन्तों और साथ ही उनके चरित्र का स्मरण हो आता है ।

जब श्रीभक्तकोकिलजी ने पूछा कि ऐसा सन्त शिरोमणि

कौन है ? तब किसी ने श्रीमहाप्रभु, किसी ने श्रीजयदेव, किसीने श्रीहित हरिवंशजी और किसी ने श्रीहरिदासजी का नाम लिया । श्रीस्वामीजी ने कहा-‘ना’ अभी और है । इनसे भी बड़ा है, इनसे भी बड़ा है ।’ भक्तों ने कहा-‘तब कौन है ? कृपा करके आप ही बताइये प्रभु ।’ भक्तों का प्रेमपूर्ण आग्रह देखकर श्रीस्वामीजी ने कहा-कि यह सन्त सिरताज श्रीमैथिलिचन्द्र जी महाराज हैं । अशोक वाटिका में अशोक वृक्ष के नीचे श्रीस्वामिनीजू सशोक विराजमान थीं । कोक शोकप्रद चन्द्रमा की चान्दनी छिटक रही थी । उसी समय लोकशोकहारी ‘श्रीराम दशरथ नन्दन’ अंकित परम प्रकाशमयी मुद्रिका आ गिरी । श्रीस्वामिनीजी ने पहिचान कर हस्त कमल में ले ली, और प्रियतम का नाम चूम-चूमकर पूछने लगीं ‘अयि मुद्रिके ! लक्षणनिधि, निष्कपट देवर लक्ष्मण के सहित श्रीराम पदाम्बुज सकुशल तो हैं ?’ ऐसा कहते कहते जो मुद्रिका की ओर देखा तो उसमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ा । भोले स्वभाव से उनके हृदय में इस भा का आविर्भाव हो गया कि प्राण प्यारे कौशल किशोर ही मेरे विछोह में मेरा ध्यान करते-करते मेरे रूप बन गये हैं । इसलिये मैं भी ध्यान करके श्रीराम बनूं । झट परास्थान में दृष्टि की । प्रियतम के ध्यानवेश में धनुषधारी निर्भय श्रीरामचन्द्र रूप हो गयीं । सम्पूर्ण अशोकवाटिका इन्द्रनीलमणि के समान नीले आलोक से उद्भासित हो उठी । इतने में भक्त विभीषण की प्रिय पत्नी शरमा अपनी बेटी कला के साथ वहां आयी । उन्होंने अशोक

वाटिका को नीलद्युति देखकर समझ लिया कि सतीगुरु श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथ का ध्यान करके तद्रूप हो गयी हैं । समीप आकर नमस्कार पूर्वक विनोद पूर्ण प्रार्थना करने लगी ‘श्रीस्वामिनीजू, मुझे यह भय होता है कि आप प्रियतम राम का ध्यान करके कीट-भृंग के समान श्रीरामस्वरूप हो गयी । अब परस्पर दाम्पत्य प्रीति कैसे बनेगी ?

श्रीस्वामिनीजी ने कहा-‘अरी शर्मीली सखि, सुन ! वे मेरा ध्यान करके मैं बन जायेंगे । दाम्पत्य प्रीति बनी रहेगी । मैं धनुष धारण करके दुरात्मा दशानन का दमन करूँगी ।

रसिक सिरताज मिथिला अवध-हृदय के महाराज युगल सरकार का ऐसा विलक्षण अनुराग है, उनके ध्यान की हरियाली हृदय में न छिपकर बाहर ऐसी छा जाती है कि उसे दूसरे भी देख सकते हैं ।